रोज़ा पार्कस

डेविड ऐडलर, चित्र: रोबर्ट कैसिल्ला हिंदी: विदूषक

रोज़ा पार्कस

डेविड ऐडलर, चित्र: रोबर्ट कैसिल्ला हिंदी: विदूषक

रोज़ा पार्कस का जन्म 4 फरवरी, 1913 को टस्कजी, अलाबामा, अमरीका में हुआ. उनकी माँ लियोना एडवर्ड्स मिककौली, एक स्कूल टीचर थीं. रोज़ा के पिता जेम्स मिककौली, पेशे से एक बढ़ई थे और घर निर्माण का काम करते थे. रोज़ा के पूर्वज, गुलाम थे.

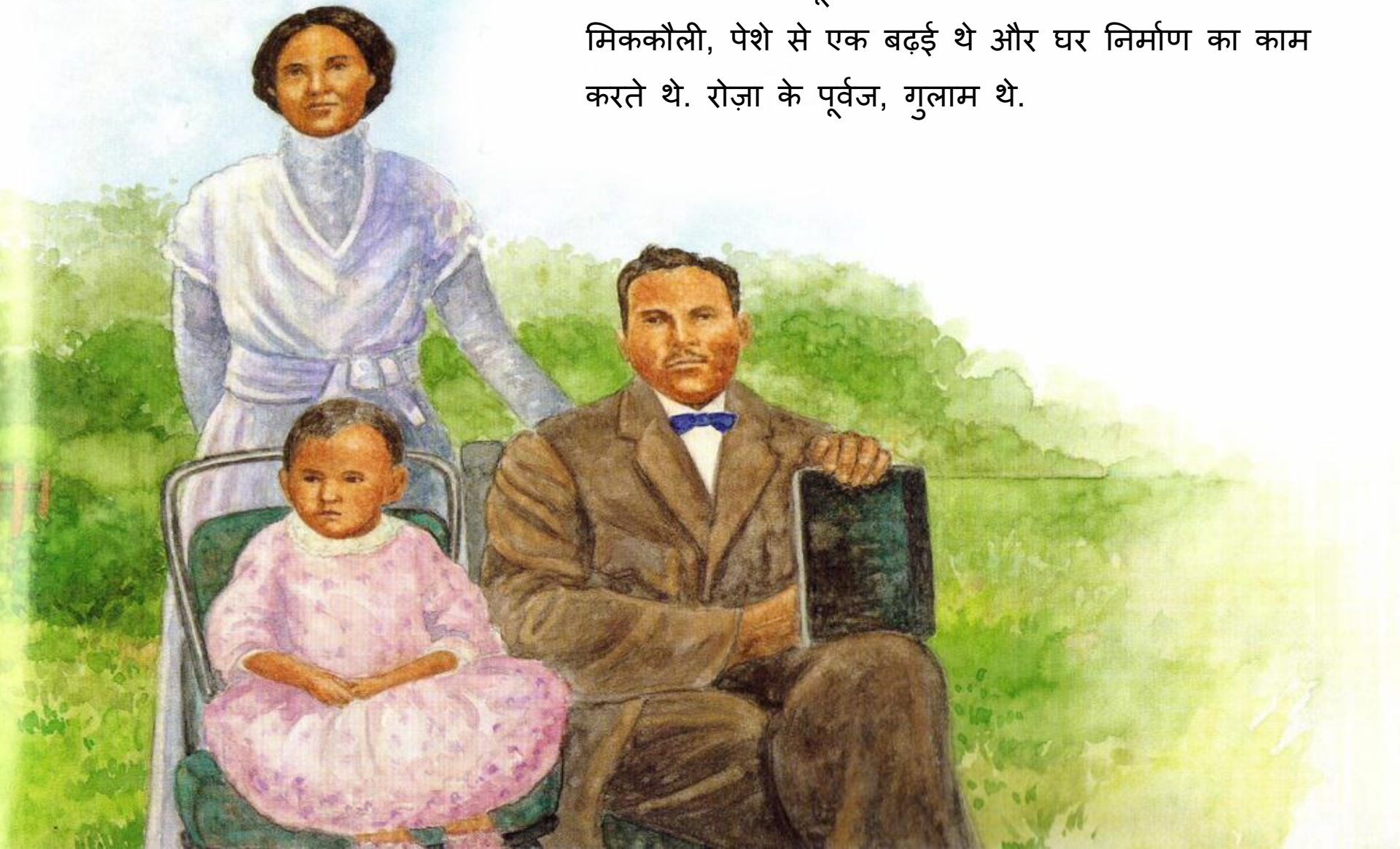

रोज़ा के जन्म के तुरंत बाद उनका परिवार घर बदलकर पाइन-लेवल, अलाबामा चला गया. वहां वे रोज़ा के दादा-दादी के छोटे फार्म पर रहने लगे. फार्म पर गायें, मुर्गियां और फलों के कई पेड़ थे.

1915 में, जब रोज़ा सिर्फ दो साल की थी तब उसके छोटे भाई - सिल्वेस्टर का जन्म हुआ. उसके बाद रोज़ा के पिता काम की तलाश में घर छोड़कर चले गए. बड़े होते समय रोज़ा ने अपने पिता को बहुत कम ही देखा.

बड़े होने पर रोज़ा अपने दादा-दादी के फार्म पर ही मजदूरी करने लगी और पास के फार्मस पर कपास तोड़ने का काम करने लगी. वसंत के मौसम में वो खेतों से खरपत बीनती. फिर पतझड़ में पौधों से कपास तोड़ती.

सिर्फ गोरों के लिए

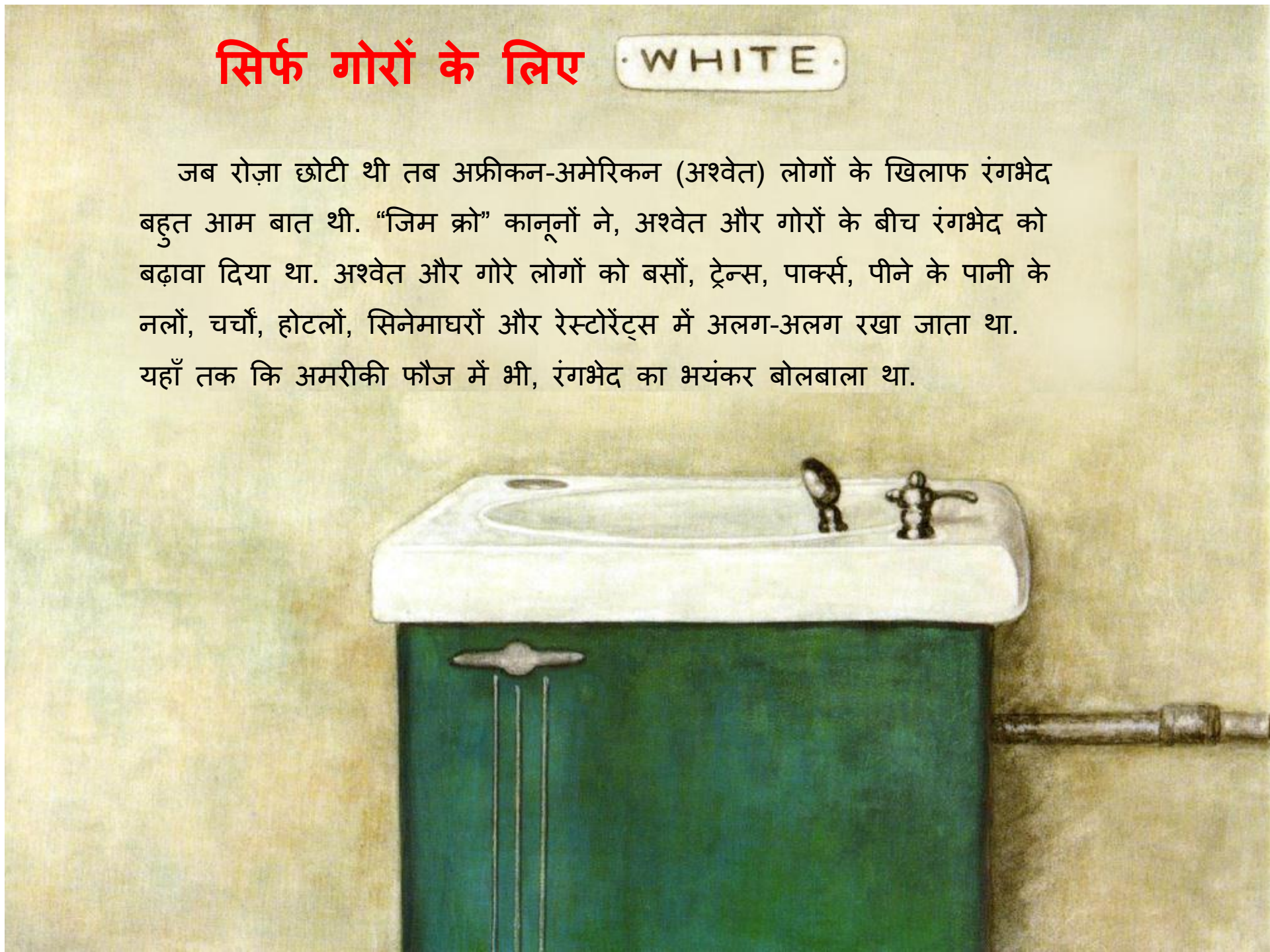

जब रोज़ा छोटी थी तब अफ्रीकन-अमेरिकन (अश्वेत) लोगों के खिलाफ रंगभेद बहुत आम बात थी. “जिम क्रो” कानूनों ने, अश्वेत और गोरों के बीच रंगभेद को बढ़ावा दिया था. अश्वेत और गोरे लोगों को बसों, ट्रेन्स, पार्क्स, पीने के पानी के नलों, चर्चों, होटलों, सिनेमाघरों और रेस्टोरेंट्स में अलग-अलग रखा जाता था. यहाँ तक कि अमरीकी फौज में भी, रंगभेद का भयंकर बोलबाला था.

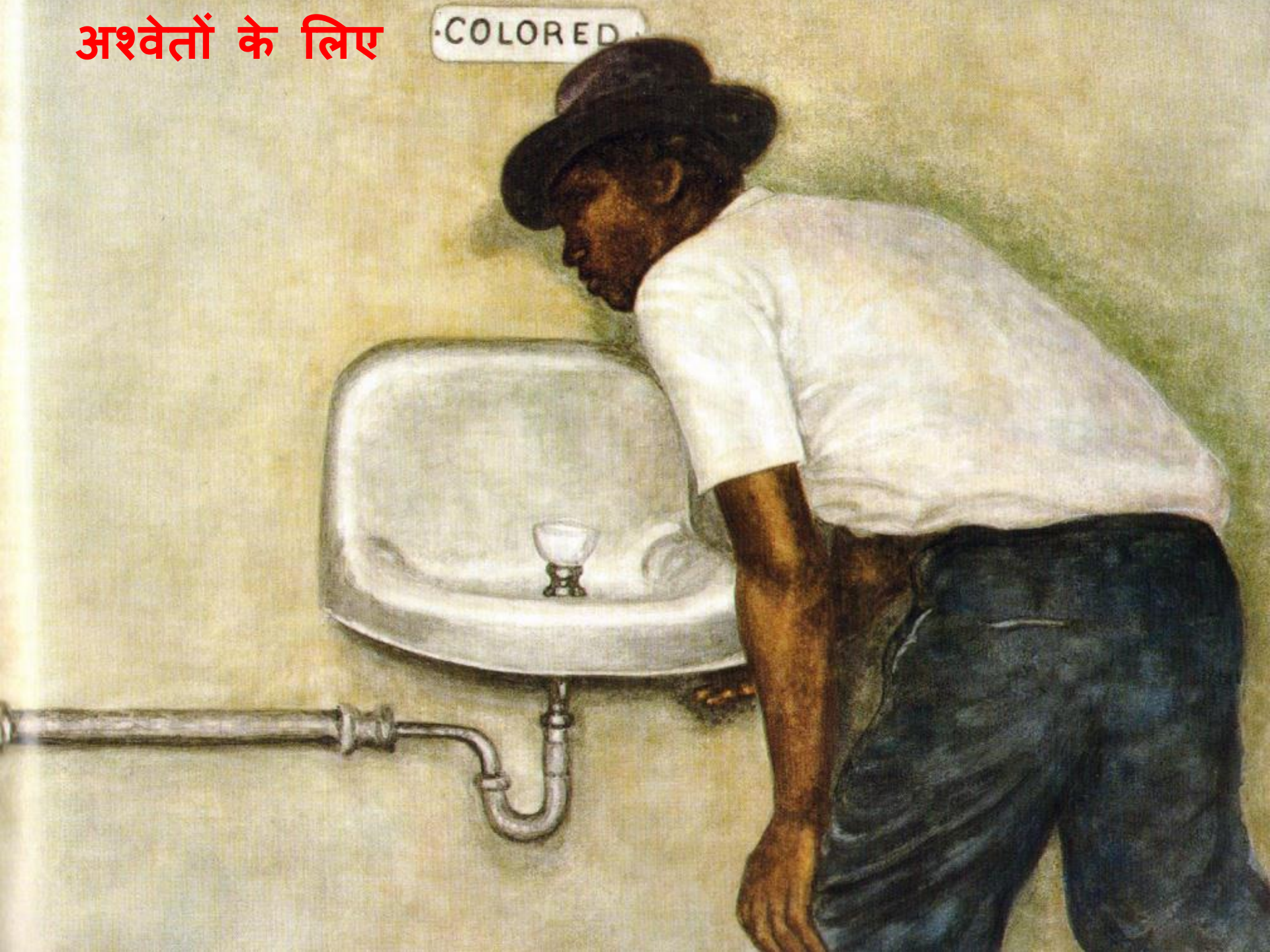

अश्वेतों के लिए
COLORED

जब रोज़ा पाइन-लेवल में रहती थी उस समय गोरों की दहशतवादी सेना – **कू-क्लक्स-क्लान** बहुत सक्रिय थी. उसके सैनिक सफ़ेद कपड़े पहनते और अपने मुंह को एक नुकीले हुड (कनटोप) से ढंकते थे. दक्षिण के शहरों में और पूरे अमरीका में इस समूह के सदस्य, राजनैतिक इलेक्शन जीतने में, उन लोगों की मदद करते जो अफ्रीकन-अमेरिकन, रोमन कैथोलिक, यहूदियों और विदेशी लोगों से नफरत करते थे. इस आतंकी संगठन ने बहुत से अफ्रीकन-अमेरिकन लोगों का क़त्ल भी किया. रोज़ा के दादाजी अपने परिवार को इस समूह से बचाने के लिए हमेशा अपने साथ एक बन्दूक रखते थे.

रोज़ा की माँ ने उसे पढ़ना सिखाया. छह साल की उम्र में रोज़ा ने अफ्रीकन-अमरीकी बच्चों के एक कमरे वाले स्कूल में, पहली क्लास में दाखिला लिया. यह स्कूल साल में सिर्फ पांच महीने ही चलता था. जबकि गोरे बच्चों का, ईंटों से बना नया स्कूल, साल में नौ महीने खुला रहता था.

पाइन-लेवल में अश्वेत बच्चों का स्कूल सिर्फ छठी कक्षा तक ही था. इसलिए 1924 में, रोज़ा को आगे की पढ़ाई के लिए मोंटगोमेरी, अलाबामा जाना पड़ा. 1929, परिवार में बीमारी के कारण उसे स्कूल छोड़ना पड़ा. रोज़ा ने अपनी बीमार दादी की देखभाल की और बाद में अपनी बीमार माँ की भी. 1933 में, रोज़ा ने हाई स्कूल की पढ़ाई समाप्त की.

1931 में, रोज़ा की मुलाकात रेमंड पार्कस - एक हज्जाम से हुई. रेमंड, अश्वेत लोगों के एक मुक्ति संगठन में बहुत सक्रिय था. रोज़ा को बहुत गर्व था कि रेमंड अश्वेत लोगों के अधिकारों के लिए लगातार अपनी आवाज़ बुलंद करता था. दिसंबर 1932 में, रोज़ा और रेमंड ने शादी की. उनकी शादी, रोज़ा की माँ के घर पाइन-लेवल में हुई.

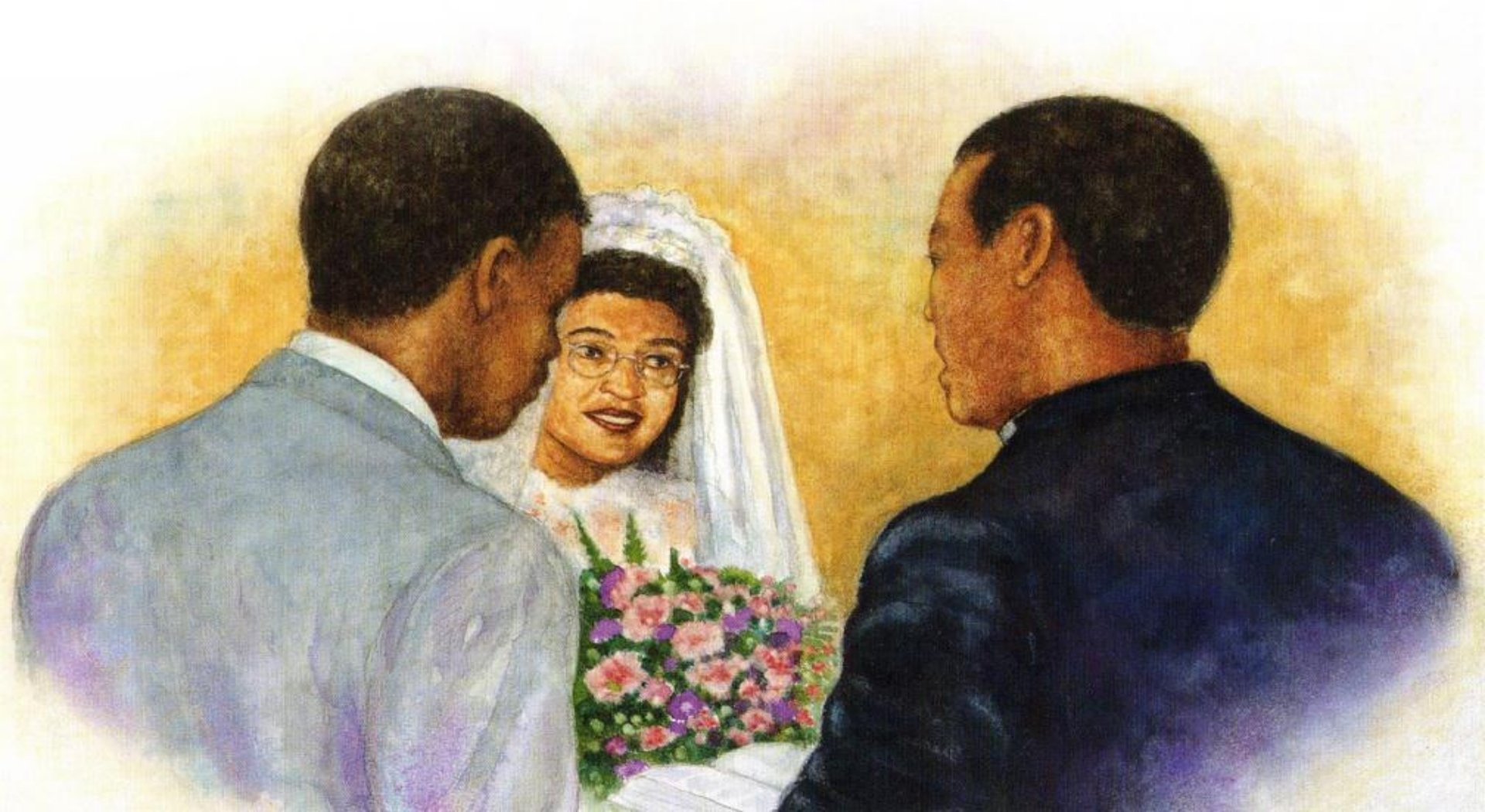

1940 के शुरू में रोज़ा, NAACP (नेशनल एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ़ कलर्ड पीपल) संस्था की सदस्य बनी. यह संगठन अश्वेत लोगों के हितों के लिए और उनके साथ दुर्व्यवहार बंद करने के लिए काम करता था. पार्कस एक लम्बे अर्से से उस संस्था का सदस्य था. NAACP की सदस्य बनने के तुरंत बाद, रोज़ा उसकी मोंटगोमेरी शाखा की सेक्रेटरी चुनी गईं.

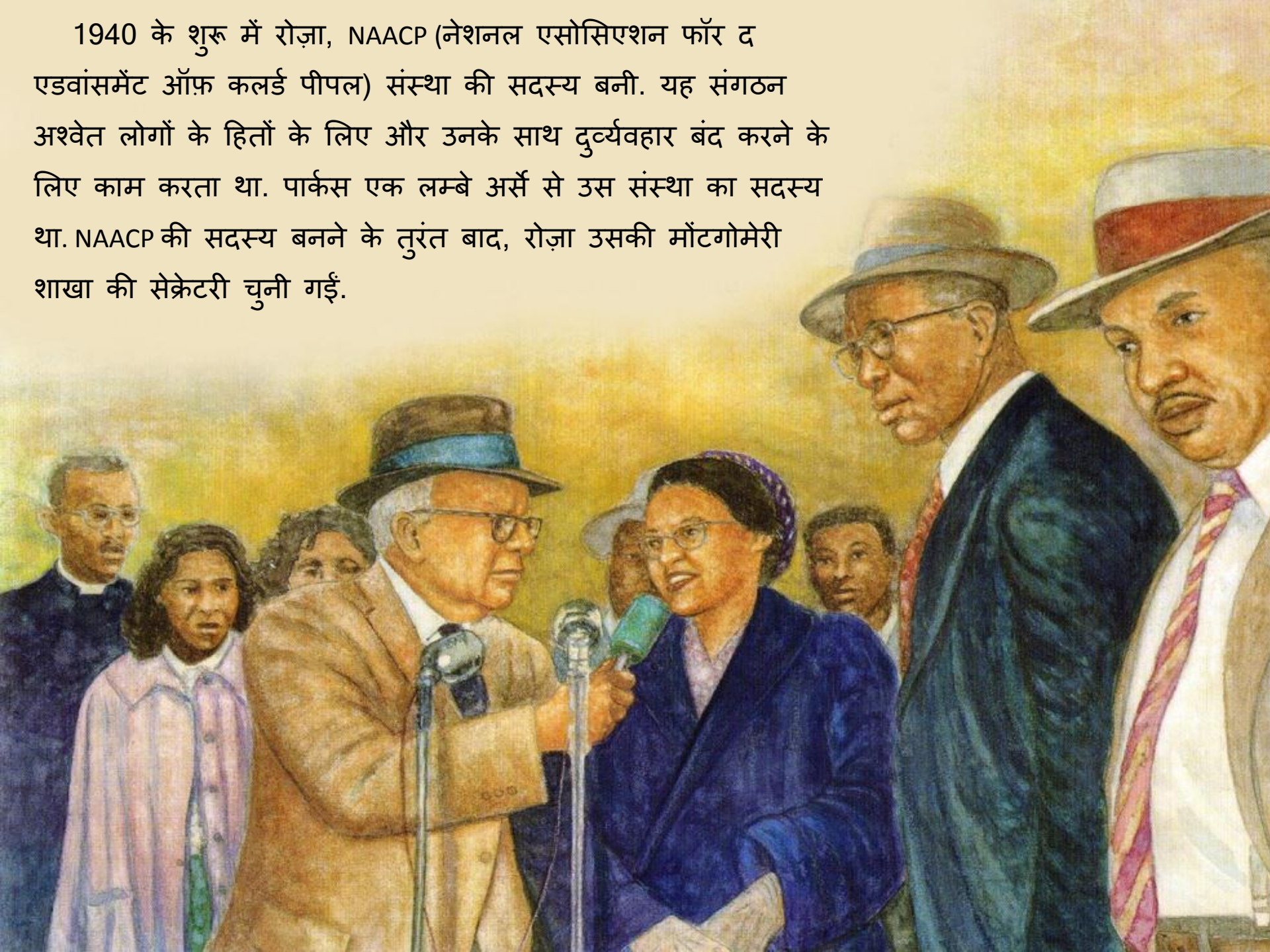

मोंटगोमेरी की बसें लोगों को यह रोजाना याद दिलाती थीं कि उनके शहर में रंगभेद बड़े पैमाने पर फैला था. अश्वेत लोग बसों में सिर्फ पीछे की सीटों पर ही बैठ सकते थे. कुछ बसों में अगर अश्वेत, आगे वाले दरवाज़े से घुसते तो टिकट खरीदने के बाद उन्हें उतरकर दुबारा पिछले पिछले दरवाज़े से चढ़ना पड़ता था. कभी-कभी जब लोग नीचे उतरते होते, तो ड्राईवर बस शुरू करके आगे चला जाता था.

1943 में एक दिन रोज़ा, भीड़ भरी बस में आगे वाले दरवाज़े से चढ़ीं. बस ड्राईवर जेम्स ब्लेक ने उनसे उतरकर पिछले दरवाज़े से चढ़ने को कहा. रोज़ा ने यह नहीं किया क्यूंकि वो अब बस में चढ़ चुकी थीं. दूसरी बात, वो शायद पिछले दरवाज़े से चढ़ भी नहीं पातीं. कारण? इतनी भीड़ थी कि पिछले दरवाज़े से अन्दर घुसना असंभव था. पर उसके बावजूद रोज़ा बस से उतरीं. उस बस पर वो फिर से चढ़ नहीं पायीं. बस आगे चल दी. रोज़ा को अगली बस का इंतज़ार करना पड़ा.

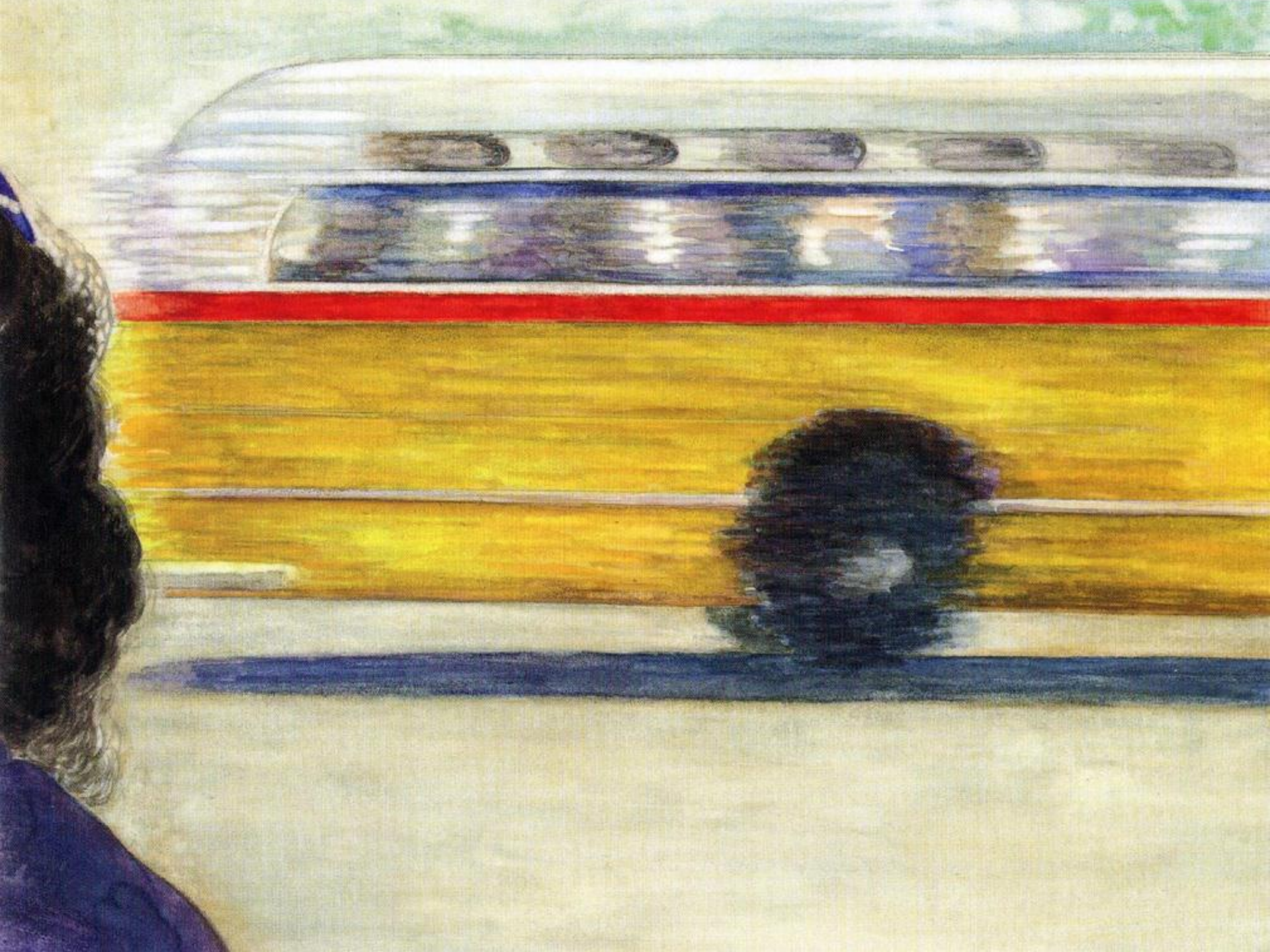

बारह साल बाद, 1955 में, रोज़ा पार्कस, एक बार फिर से जेम्स ब्लेक से मिलीं. उस समय रोज़ा, मोंटगोमेरी के एक डिपार्टमेंट स्टोर में, एक दर्जी की असिस्टेंट थीं. वो काम ख़त्म करके घर लौट रही थीं. उन्होंने क्लीवलैंड अवेनयू से बस पकड़ी और बस के मध्य भाग में बैठ गईं. अश्वेत लोगों को बस के मध्य और पिछले भाग में बैठने की इज़ाज़त थी – पर तभी, जब कोई गोरा मुसाफिर खड़ा न हो.

अगले स्टॉप पर बस में कुछ गोरे मुसाफिर चढ़े और भीड़ की वजह से वो बस के बीच वाले भाग में गए जहाँ रोज़ा बैठी थीं. ड्राईवर ने रोज़ा की कतार के चार अश्वेत मुसाफिरों से उठने को कहा. उसमें से तीन तो उठ गए पर रोज़ा पार्कस नहीं उठीं. उन्होंने गोरे मुसाफिरों जितना ही बस का किराया दिया था. उन्हें पता था कि मोंटगोमेरी के नियमों के अनुसार उन्हें उठाना चाहिए था. पर वो यह भी जानती थीं कि वो कानून नाजायज़ था. जब रोज़ा नहीं उठीं तब जेम्स ब्लेक ने पुलिस को बुलाया, जिसने रोज़ा पार्कस को गिरफ्तार किया.

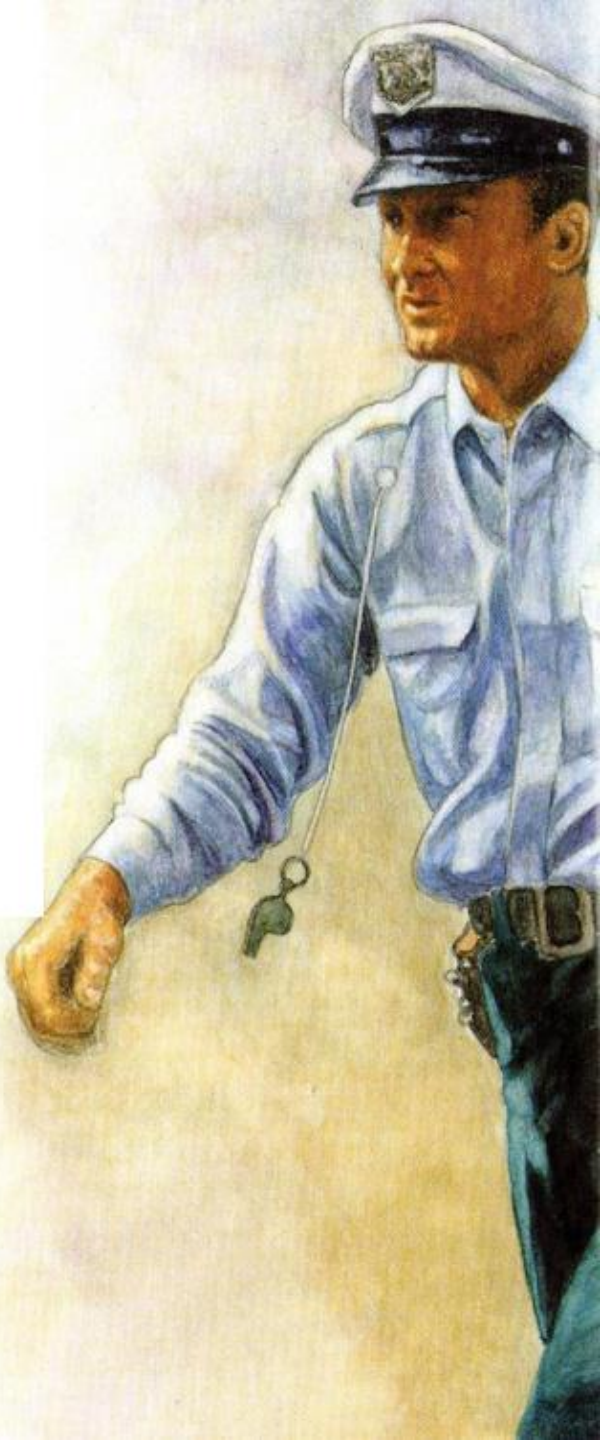

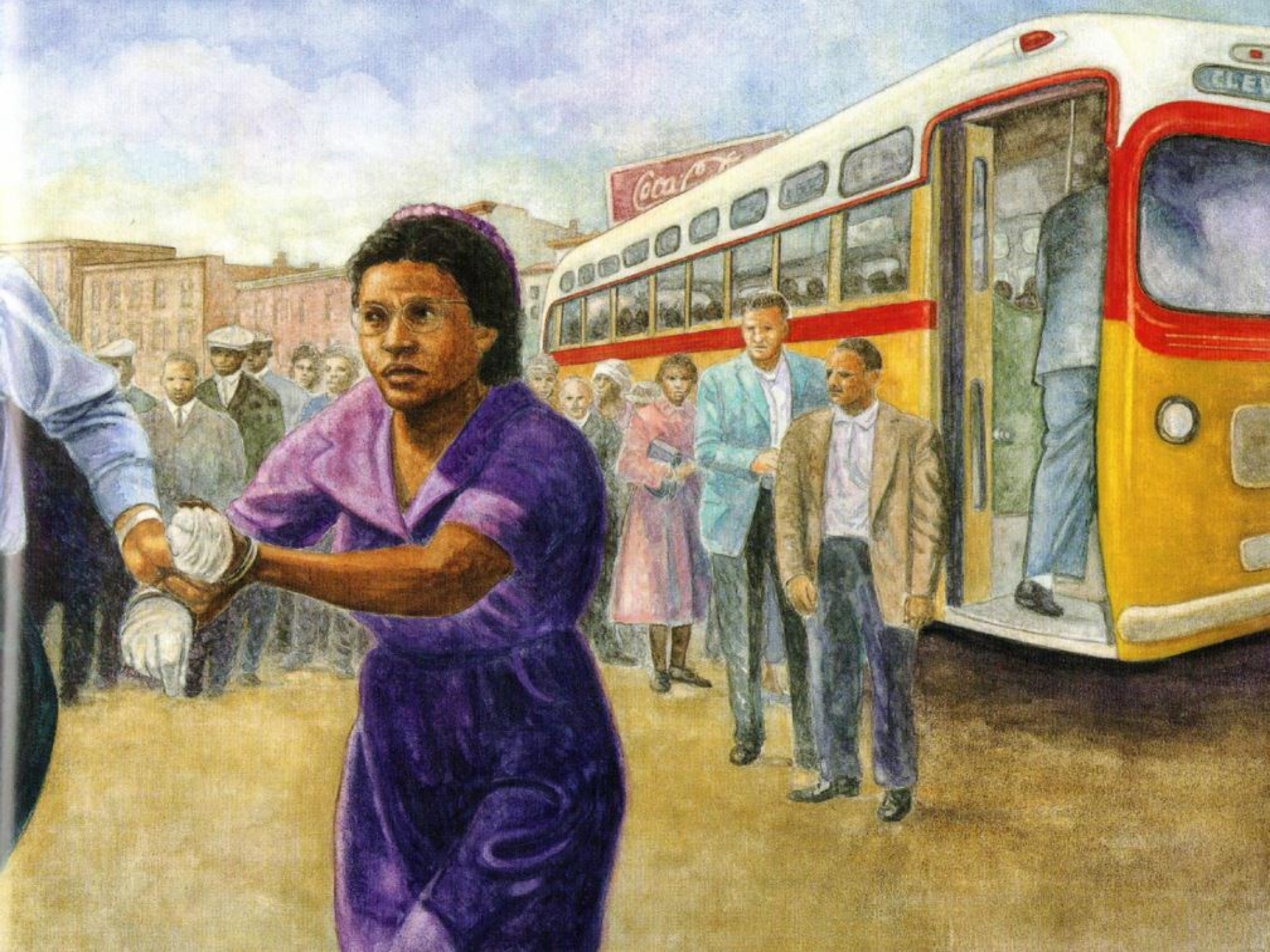
Coca-Cola

सोमवार, दिसम्बर 5 को, रोज़ा को स्थानीय कोर्ट में पेश किया गया. वहां उन्हें “रंगभेद” के कानून का उल्लंघन करने का दोषी पाया गया. उन पर 10 डॉलर और साथ में कोर्ट-कचेहरी के खर्च का जुर्माना लगा. रोज़ा के वकीलों ने इस गलत निर्णय के खिलाफ, उच्च कोर्ट में अपील की.

रोज़ा की गिरफ़्तारी का, अफ्रीकन-अमेरिकन समाज ने सख्त विरोध किया और दिसम्बर 5 के बाद से, मोंटगोमेरी में पब्लिक बसों का पूर्णतः बहिष्कार किया. काम पर जाने के लिए लोगों ने अन्य साधन अपनाये. कुछ लोग फैक्ट्री और ऑफिस, साइकिलों पर गए. उन्होंने अक्सर लम्बी यात्रायें पैदल-पैदल तय कीं.

बस बहिष्कार के मुहिम की अगुवाई डॉ. मार्टिन लुथर किंग जूनियर ने की. वो डेक्स्टर अवेनयू बैप्टिस्ट चर्च के नए युवा पादरी थे.

5 दिसंबर की शाम को, किंग ने एक विशाल जनसभा को संबोधित किया. उन्होंने लोगों को, बहिष्कार के कारण समझाए. “एक समय आता है,” उन्होंने कहा, “जब लोग अत्याचारों से तंग आ जाते हैं. आज शाम मैं अत्याचारियों से कहना चाहता हूँ कि लम्बे अर्से से ज़ुल्म सहते-सहते, अब हम बिलकुल थक गए हैं. हम रोज़-रोज़ बेईज्ज़त होने से तंग आ चुके हैं. हम अत्याचार की ठोकरें खा-खाकर अब पस्त हो गए हैं.”

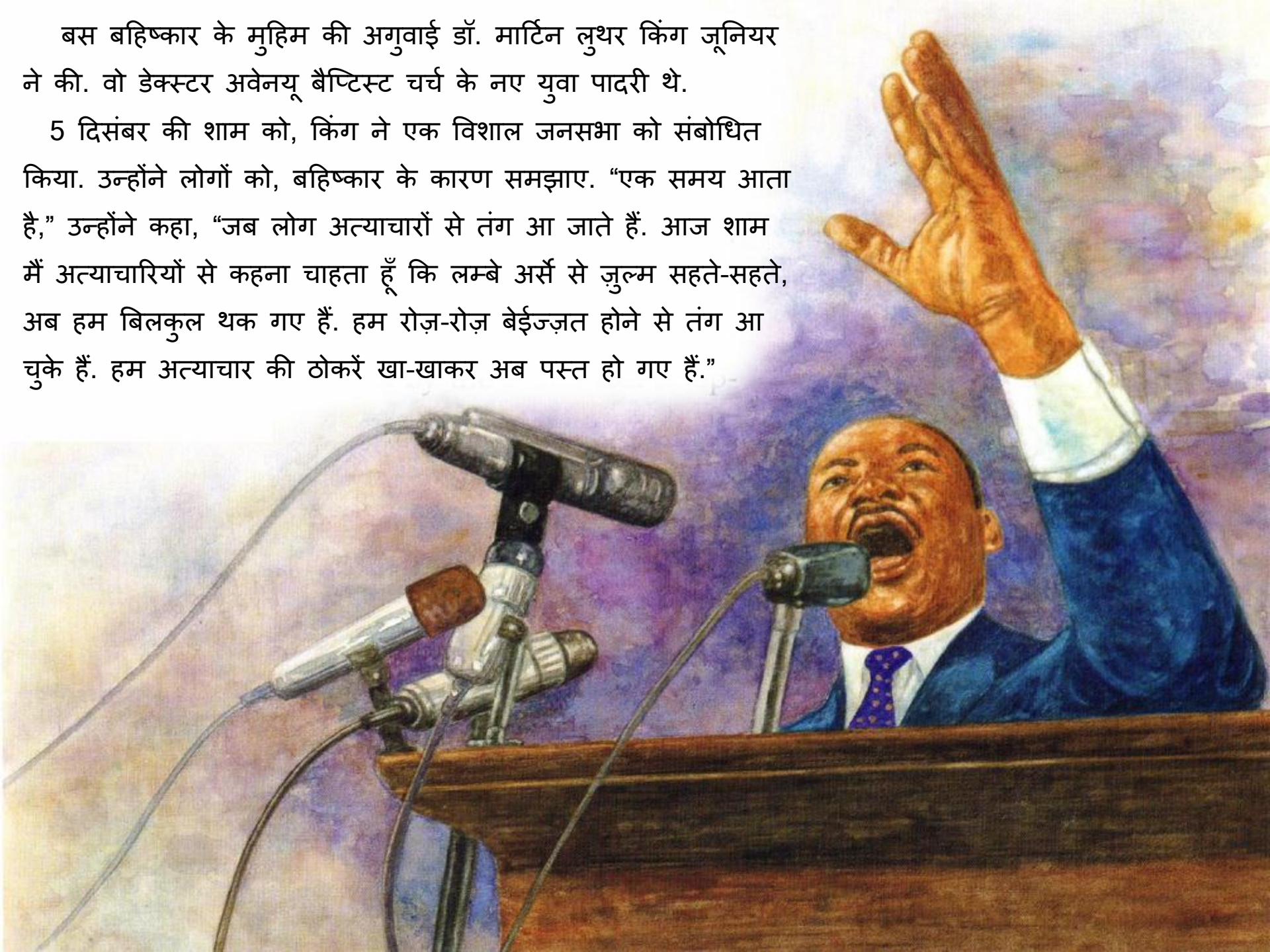

पब्लिक बसों का बहिष्कार साल भर से ज्यादा चला. उस दौरान किसी भी अश्वेत ने, मोंटगोमेरी, अलाबामा की पब्लिक बसों में सवारी नहीं की.

रोज़ा पार्कस और डॉ. किंग समेत कई अन्य लोगों को गिरफ्तार किया गया. जिन लीडरों ने बस बहिष्कार का नारा दिया, उनके घरों में बम्ब फेंके गए.

13 नवम्बर 1956 को, अमरीका के सुप्रीम कोर्ट ने अपना निर्णय दिया और पब्लिक बसों में रंगभेद को गैर-कानूनी ठहराया. 21 दिसंबर को यह निर्णय जब मोंटगोमेरी पहुंचा तभी बसों का बहिष्कार समाप्त हुआ. फिर कई अख़बारों के रिपोर्टर्स रोज़ा के पास आये और उन्होंने दुबारा बस में बैठीं रोज़ा पार्कस के फोटो खींचे.

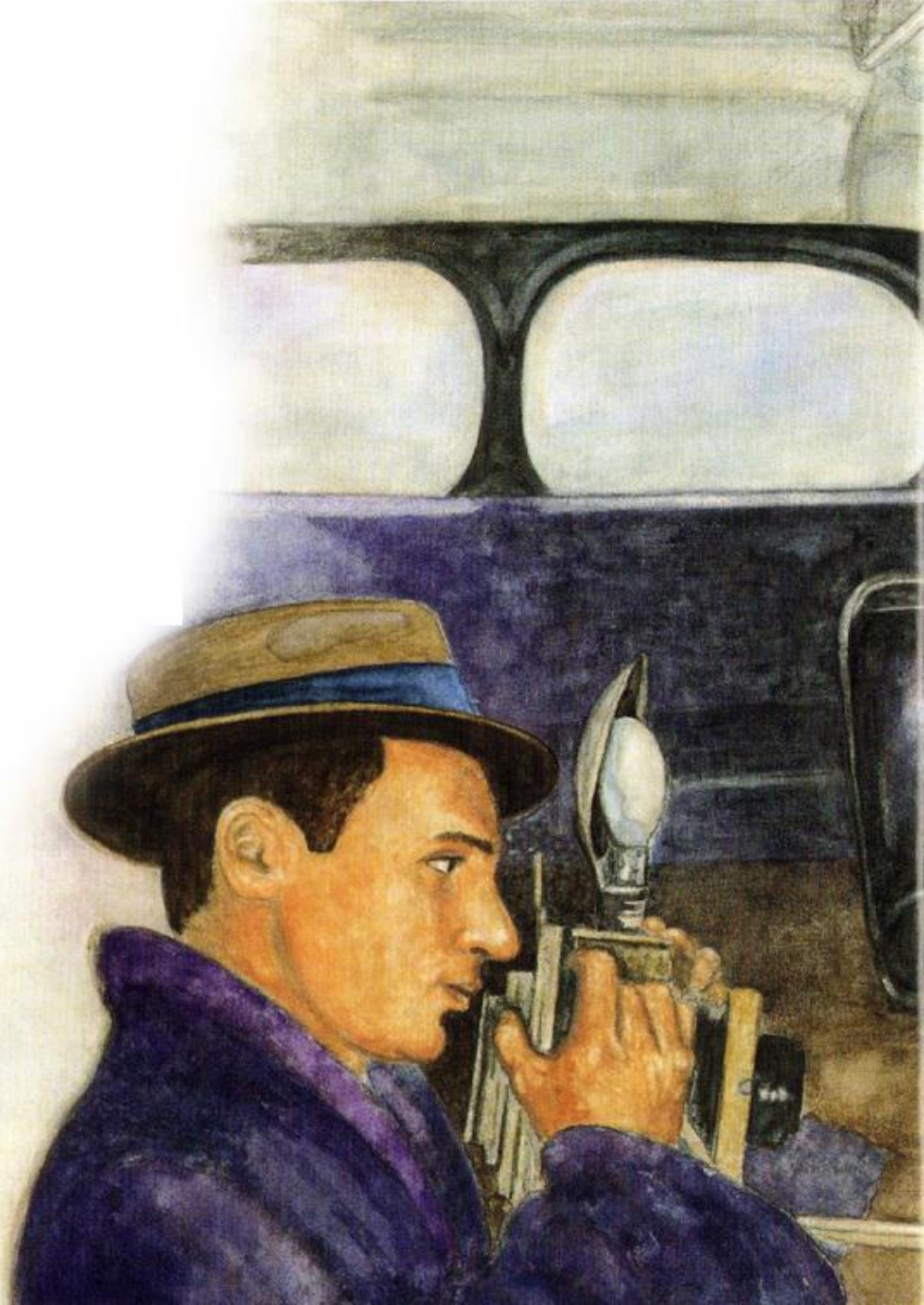

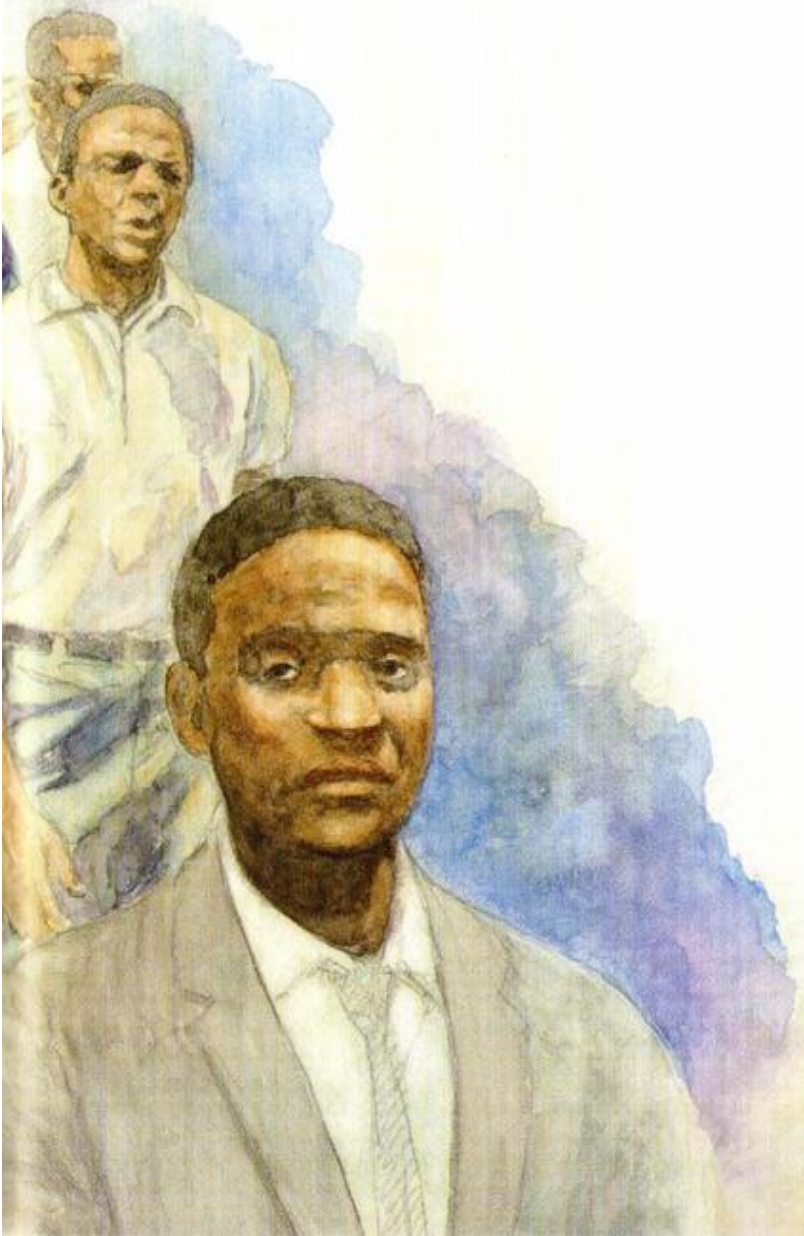

कई लोगों का मानना है कि अमरीका में, सभी लोगों के लिए सामान अधिकारों की लड़ाई, रोज़ा पार्कस की गिरफ्तारी के बाद ही शुरू हुई. मई 1954 में, सुप्रीम कोर्ट ने एक और निर्णय दिया और अश्वेत और गोरे बच्चों के लिए अलग-अलग स्कूलों को भी गलत और गैर-कानूनी ठहराया.

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद पब्लिक बसों और स्कूलों में तो रंगभेद बंद हुआ, पर उसके बावजूद अश्वेत लोगों के साथ भेदभाव चलता रहा. नागरिक अधिकारों की लड़ाई के कई मोर्चों और रैलियों में रोज़ा पार्कस ने भाग लिया.

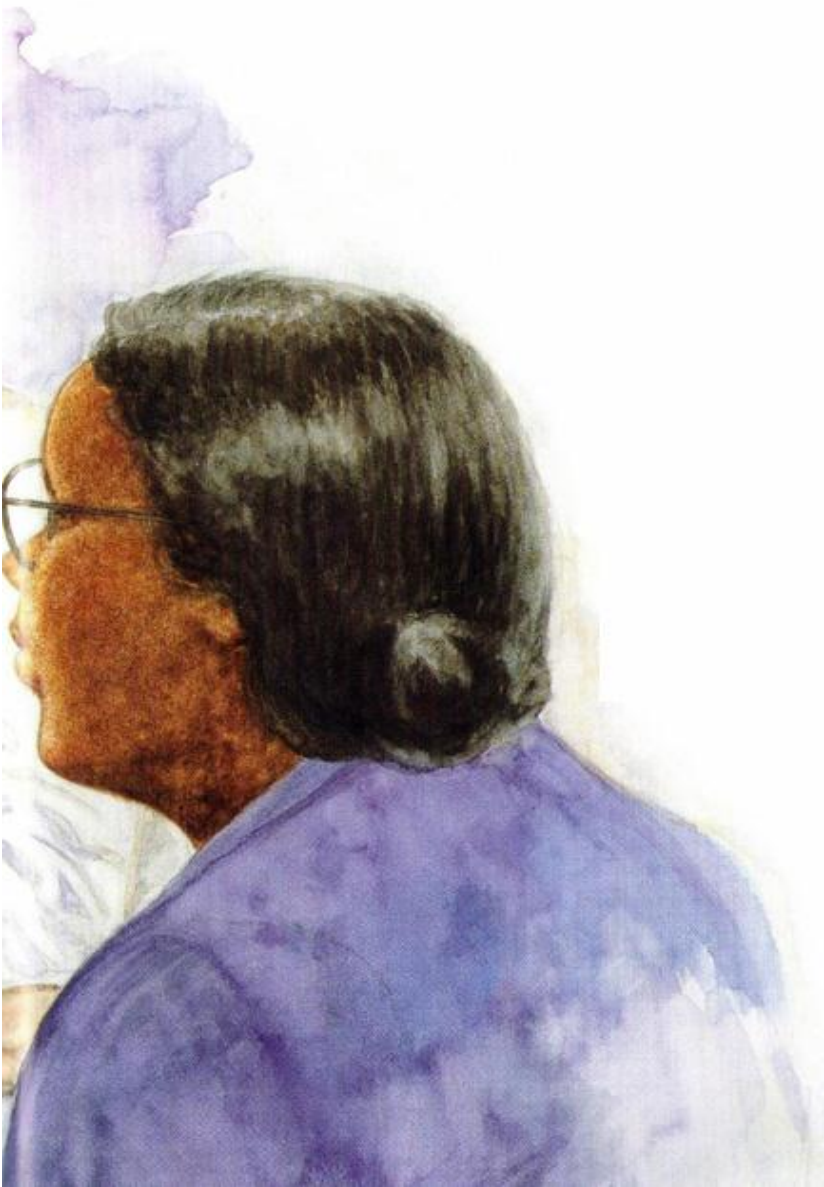

रोज़ा पार्कस को टेलीफोन पर तमाम धमकियाँ मिलती थीं. उनका परिवार, उनकी सुरक्षा को लेकर बहुत चिंतित था. 1957 में, रोज़ा और रेमंड पार्कस, रोज़ा की माँ के साथ मोंटगोमेरी छोड़कर, डेट्रॉइट, मिशिगन चले गए. डेट्रॉइट में रोज़ा का भाई सिल्वेस्टर रहता था.

1965 में रोज़ा ने, अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधि जॉन कोन्येर्स के डेट्रॉइट ऑफिस में काम करना शुरू किया. रोज़ा ने अपने काम के दौरान बहुत से अश्वेत लोगों की मदद की और अनेकों गरीब लोगों को घर दिलवाए. 1988 में रोज़ा पार्कस रिटायर हुईं.

1970 का दशक, रोज़ा पार्कस के लिए मुश्किल साल थे. 1977 में, एक लम्बी बीमारी के बाद उनके पति का देहांत हुआ. उसके कुछ समय बाद उनके भाई सिल्वेस्टर भी गुज़र गया. फिर 1979 में, रोज़ा की माँ भी चल बसीं.

1987 में, **रोज़ा ने रोज़ा एंड रेमंड पार्कस इंस्टिट्यूट फॉर सेल्फ-डेवेलपमेंट** स्थापित की. इस संस्था ने बहुत से युवा लोगों को उनकी पढ़ाई पूरी करने में मदद दी.

रोज़ा पार्कस को अक्सर "नागरिक अधिकार आन्दोलन" की जननी माना जाता है. उनका आन्दोलन, अमेरिका में कई ज़रूरी सुधार और प्रगितिशील परिवर्तन लाया. अब अमेरिका में किसी भी व्यक्ति के साथ उसकी नस्ल, रंग, धर्म, नागरिकता के आधार पर किसी भी होटल, रेस्टोरेंट, या कार्य-स्थल पर भेदभाव नहीं किया जा सकता है. हरेक नागरिक का वोट देने का अधिकार भी, पूरी तरह सुरक्षित है.

रोज़ा पार्कस को अनेक सम्मान और पुरुस्कार मिले जिनमें **स्पिनगार्ण मैडल**, **मार्टिन लुथर किंग अहिंसा शांति पुरुस्कार**, **एलेअनोर रूसवेल्ट वुमन ऑफ़ करेज अवार्ड**, और **प्रेसिडेंट मैडल फॉर फ्रीडम** अवार्ड उल्लेखनीय हैं. रोज़ा के सम्मान में, मोंटगोमेरी के क्लीवलैंड अवेनयू का नाम बदलकर, **रोज़ा पार्कस बुलेवार्ड** रखा गया.

पर शायद रोज़ा पार्कस के लिए सबसे बड़ा सम्मान था – कि अब सब नस्लों, रंगों के लोग पब्लिक बसों में एक-दूसरे के साथ सफ़र कर सकते थे और उनके बच्चे स्कूलों में साथ-साथ पढ़ सकते थे. अब सभी लोगों के सामान नागरिक अधिकार थे, और लोग उनके साथ आदर के साथ पेश आते थे.

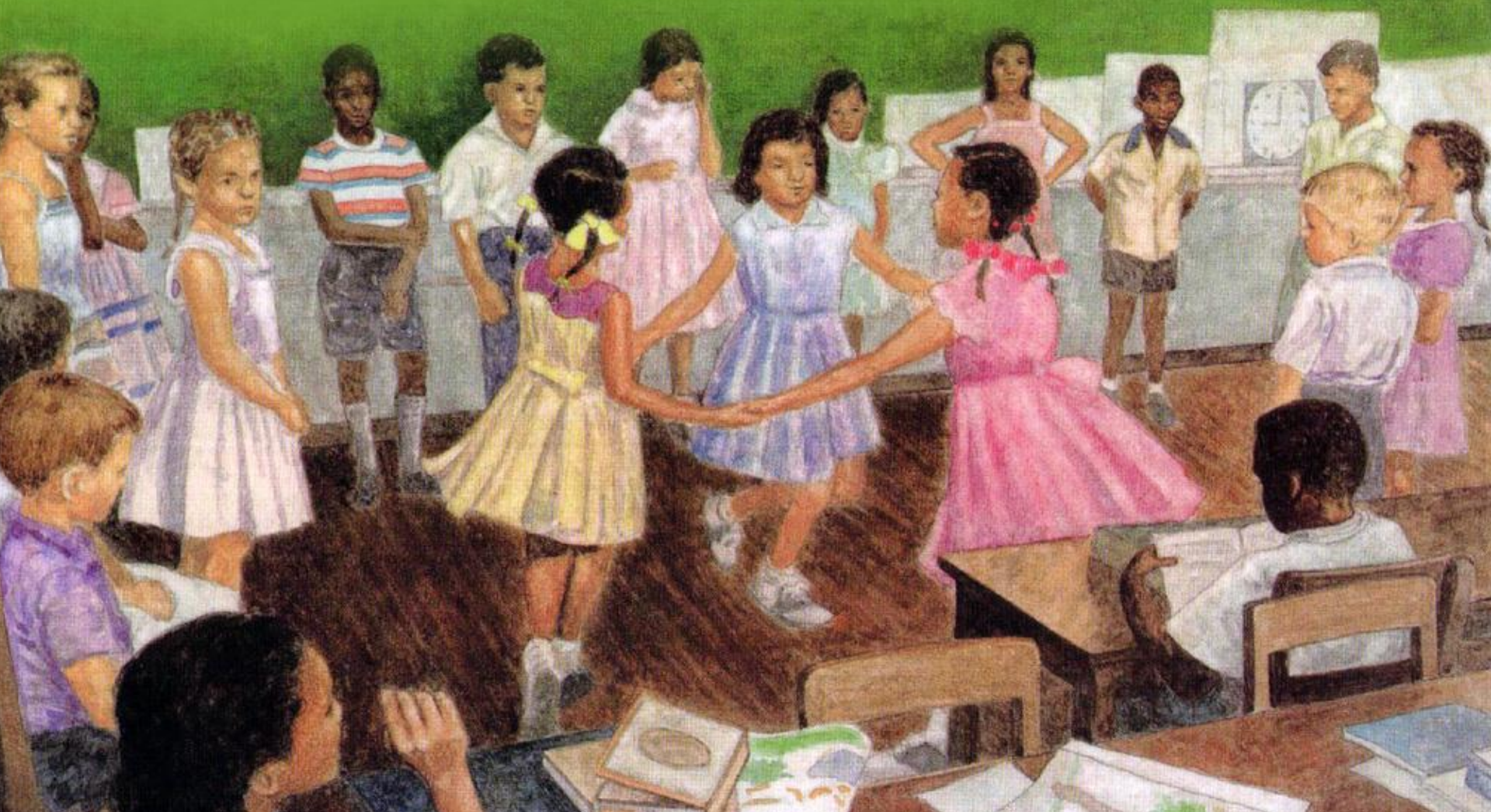

लेखक का नोट

टस्कजी, अलाबामा जहाँ रोज़ा पार्कस का जन्म हुआ, वहां पर अब टस्कजी इंस्टिट्यूट या टस्कजी यूनिवर्सिटी है. उसकी स्थापना 1881 में, बुकर टी. वाशिंगटन (1856-1915) ने की. उसका उद्देश्य अफ्रीकन-अमेरिकन युवा छात्रों को, कुशलताएँ सिखाना था और उन्हें नौकरियों के लिए तैयार करना था.

जिस क्रांतिकारी अश्वेत वकील ने सभी रंग, नस्ल के बच्चों के लिए समान स्कूलों की लड़ाई लड़ी थी उनका नाम था थुरगुड मार्शल. 1967 में, थुरगुड मार्शल अमरीकी सुप्रीम कोर्ट में पहले अश्वेत जज नियुक्त हुए.

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1913 टस्कजी, अलाबामा में 4 फरवरी को जन्म

1932 रेमंड पार्कस से शादी

1943 मोंटगोमेरी में NAACP की सचिव चुनी गईं

1954 मई 17 को सुप्रीम कोर्ट ने “रंगभेद” करने वाले स्कूलों को गैर-कानूनी और असमान करार दिया

1955 1 दिसंबर को बस में पीछे नहीं बैठने के लिए गिरफ्तार

1955 5 दिसंबर से मोंटगोमेरी में पब्लिक बसों का बहिष्कार शुरू.
वो बहिष्कार 21 दिसंबर, 1956 को ख़त्म हुआ

1956 13 नवम्बर को सुप्रीम कोर्ट ने “रंगभेद” समाप्त कर बसों में लोगों को कहीं भी बैठने की आज़ादी दी

1965 कांग्रेस सदस्य जॉन कोन्येर्स के साथ काम शुरू

1987 **रोज़ा एंड रेमंड पार्कस इंस्टिट्यूट फॉर सेल्फ-डेवेलपमेंट** की स्थापना
“मैडल ऑफ़ फ्रीडम” पुरुस्कार से सम्मानित

2005 24 अक्टूबर को डेट्रॉइट, मिशिगन में निधन